पर्यावरण चालीसा

दोहा :– हर मण्डप की न्यूनता दूर करे मिलि आज।

जीवन धन्य बना सके, पायें सुख के साज।।

चौ0– जय – जय प्रकृति के संवाहक। जल जंगल सुख बने प्रदायक।।

जय हो श्रोत घाट औ जल की। जय विद्युत के ताकत बल की।।

जय पत्थर औ दिव्य धूल की। खिले हुये सब दिव्य फूल की।

जय हरीतिमा लाने वाले। अमृत जल बरसाने वाले।।

स्वच्छ वायु के बने प्रदाता। जय हो पर्यावरण विधाता।।

भॉति भॉति के रूप की जै जै। करे प्रदूशण को जो क्षय क्षय।।

जैविक और अजैविक की जै। भौतिक औ दैविक की जै जै।।

वृक्ष देव की जय – जय कारी। जय हो मंगल पावन कारी।।

जय प्रकृति के अपादान की। जय संसाधन सब सामान की।।

जय कदली अंगूर आम की। भीतल पवन औ तप्त धाम की।।

जय काफल भाहतूत गेवाई। धरा सुखद सम्पन्न बनाई।।

जय प्रकृति सिरजावन हारा। कैसा दिखता दिव्य पसारा।।

बॉज बुॅरा ा उतींस की जै जै। खड़िग चीड़ सिरिस की जै जै।।

जय हो भीमल, घास की जै जै। करे प्रदूशण ना ा की जै जै।।

अन्न फूल औ फल के दाता। जय जय पर्यावरण विधाता।।

स्वच्छ रखें जो जन की जै जै। हो प्रेमी प्रकृति की जै जै।।

प्रकृति से बहु लाभ उठाई। जीवन सुफल धन्य कर भाई।।

एक वृक्ष दस पुत्र समाना। सोचि विचार करैं मन लाना।।

रक्षित सेवित पोशण करहीं। मन मोदक जन सब अनुसरही।।

मानव पर उपकार तुम्हारे। जियत मरत ले साथ विचारे।।

खाद्य श्रंखला के हितकारी। दिव्य कथा है प्रकृति तुम्हारी।।

बरगद पीपल औ कदली की। गुलबहार जै जै तुलसी की।।

अदरक हल्दी सब उपकारी। सोचहुॅ मन से आज बिचारी।।

प्राकृतिक संसाधन जै – जै। नवयुग के सब साधन जै जै।।

पर्यावरण विकास करे जों। निॅ चत सुख का वास भरे वो।।

जय हिमराज जन्तु की जै जै। फल पादप अरू तन्तु की जै जै।।

हर मनु आज करै तरू रक्षा। परत परत की होय सुरक्षा।।

अन्वेशण बहुॅ करने वाले। प्राणि सर्व दुःख हरने वाले।।

कारक कौन सतावत भाई। कर संधान बतावत आई।।

हिमगिरि की तुम करते रक्षा। विविध भॉति तुम करे सुरक्षा।।

सूख रही नदियॉ बेचारी। तड़प रही धरती है सारी।।

भू – कटाव होने ना पावे। सुख समृद्धि जन कैसे पावे।।

कारक कौन सतावन हारा। प्रकृति एक बतावन हारा।।

केवल दोहन मत कर भैया। डूबेगी इस जग की नैया।।

चौड़ी पत्ती वृक्ष लगाओ। जग को सब मिलि के हरशाओं।।

जीव – जन्तु जंगल बनवासी। बने हुये हैं आज उदासी।।

हे मानव उपकार तुम्हारा। सभी मांगते प्यार तुम्हारा।।

'नन्द' करे हर कन्द की जै जै। जय हो परमानंद की जै जै।।

जीव जन्तु जल थल की जै जै। सुखद घटा हर पल की जै जै।।

दोहाः– एक एक जन मिलि करें, काम आज सब नेक।

प्रकृति के उपहार से, दुविधा मिटे अनेक।।